समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : रु. ३.५०/-

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

• १५ जून २०१२ • वर्ष : १५
• अंक : १२ (निरंतर अंक : १८०)

गुरुपूर्णिमा विशेषांक-२

आद्य शंकराचार्यजी

पूज्य बापूजी के सद्गुरु
स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

हे महापुरुषो ! आप सभीने सद्गुरु को रिझाया, ब्रह्मज्ञान पाया, गुरु-परम्परा को बढ़ाया और समाज को जगाया... व्यासपूर्णिमा के पावन अवसर पर अपने हयात (प्रकट) सद्गुरु के दर्शन, पूजन, सत्संग-श्रवण द्वारा हम ब्रह्मानंद प्राप्त करते हैं।

शिरडी के साई बाबा

श्री रामकृष्ण परमहंस

संत तुलसीदासजी

संत कबीरजी

संत एकनाथजी

बोलता-मुस्कराता कर्मयोग

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

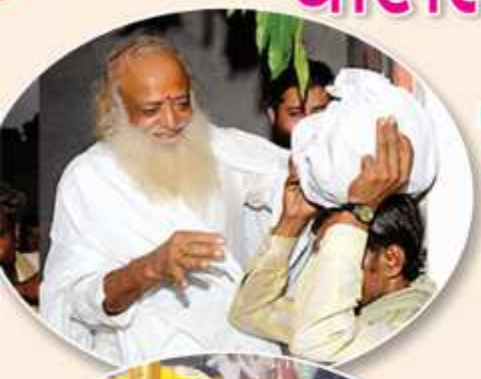

'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' की आदत तो बहुत लोगों के जीवन में देखने को मिलती है लेकिन कथनी करनी एक समान, बापू ऐसे संत महान।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू केवल कहते ही नहीं हैं बल्कि करके भी दिखाते हैं। कर्मयोग आपश्री के जीवन में पग-पग पर प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। कर्म को योग में बदलने की कला सिखाते हुए संतश्री कहते हैं : "पहुँच जाओ किन्हीं आत्मज्ञानी महापुरुष के श्रीचरणों में और सत्संग व विवेक इन दो दुर्लभ नेत्रों को पाकर कर्म को योग बना लो। कर्म के फल के संग से आप लेपायमान न होओ। आसक्ति का त्याग करके माता-पिता की, कुटुम्बी की सेवा करो लेकिन परिवार के लोग मुझे सुख दें यह अपेक्षा छोड़ दो। आप सुख के भिखारी मत बनो। शास्त्र-मर्यादा के अनुसार दूसरों के मंगल के लिए जो भी कर्तव्य है उसमें लग जाओ तो मंगलस्वरूप परमात्मा आपके हृदय में आनंद-आनंद प्रकटायेगा।"

भगवान श्रीकृष्ण भी कहते हैं :

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम्। आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय॥

'हे धनंजय ! जिसने कर्मयोग की विधि से समस्त कर्मों को परमात्मा में अर्पण कर दिया है और जिसने विवेक द्वारा समस्त संशयों का नाश कर दिया है, ऐसे वश में किये हुए अंतःकरणवाले पुरुष को कर्म नहीं बाँधते।' (गीता : ४.४१)

फिर वह पुरुष कर्म करता हुआ दिखेगा लेकिन उसको कर्मबंधन नहीं लगेगा। ऐसे महापुरुष के द्वारा ही संसार का वास्तविक मंगल होता है। उन्हींके द्वारा वास्तव में निष्काम कर्म होते हैं।

महान कर्मयोगी पूज्य बापूजी की जीवनचर्या का अवलोकन किया जाय तो लगता है जैसे कर्मयोग ने स्वयं शरीर धारण कर लिया हो। निंदा व स्तुति के कितने ही प्रसंग आये-गये लेकिन महाकर्मयोगी का कर्मयोग, अलौकिक आनंद बाँटने का सेवाकार्य अबाधित गति से सतत चलता ही रहा है। महाकर्मयोगी बापूजी स्वयं तो कर्मयोग में रत रहते ही हैं, साथ ही अपने करोड़ों शिष्यों को भी प्राणिमात्र के हित के लिए सेवाकार्यों में लगाते हैं। पूज्य बापूजी नगर-नगर, डगर-डगर जाकर दीन-हीनों, गरीबों, अनाथों, आदिवासियों का कुशल-क्षेम पूछते हैं, उनकी हर आवश्यकता का इस प्रकार खयाल रखते हैं जैसे माँ अपने नन्हे सुकुमारों का खयाल रखती है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

उसका जीवन सफल है

(आत्मनिष्ठ पूज्य बापूजी की मधुमय अमृतवाणी)

हे महापुरुषो ! आपने खून का पानी करके भी समाज को ब्रह्मरस से सींचने का जो साहस किया, जो प्रेरणा की, जो प्रसाद दिया आज उसी प्रसाद से समाज में थोड़ी नैतिकता दिखती है, थोड़ा स्वास्थ्य दिखता है, थोड़ी आध्यात्मिकता दिखती है और प्रभु को अवतरित करने का छुपा सामर्थ्य भी कभी-न-कभी प्रकट होता है । अपने दिल के देवता को पाने की क्षमता रखनेवाले मनुष्य... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८०, जून २०१२)**

गुरु के 'दालगप्पू' ने पचायी परमार्थ की दाल

कल्याण रोज पानी लेने जाता । आते-आते उसे दोपहर हो जाती, वह थक जाता था । ईर्ष्यालु शिष्य कानाफूसी करते : 'अच्छा हुआ, सेवा का भूत हमेशा चढ़ा रहता था न ! अब पता चलेगा ।' परंतु गुरुसेवा में कितना आनंद आता है यह एक सच्चा गुरुभक्त ही जान सकता है ।

एक दिन पानी लाते समय कल्याण की फूलती साँस व पसीने से तरबतर शरीर को देख गुरुजी का हृदय भर आया । वे प्रेमभरे शब्दों में बोले : ''कल्याणा ! पानी लाने में तुझे बहुत कष्ट होता है न ! और फिर... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८०, जून २०१२)**

शुभ संकल्प का प्रतीक रक्षाबंधन

(पूज्य बापूजी की अमृतवाणी)

बहन एक धागा लेकर भाई के हाथ पर बाँधती है । चाहे वह धागा सूत का हो, चाहे आधुनिक ढंग की बनी-बनायी राखी हो लेकिन उसमें बहन की भावना काम करती है कि 'मेरे भाई का सुयश हो, मेरा भाई त्रिलोचन बने । बाहर की आँखों से जो जगत दिखता है, उसको सच्चा मानकर उलझे नहीं, ज्ञान की नजर से देखे कि यह जगत बदलता है, मन बदलता है, शरीर बदलता है फिर भी अबदल आत्मा एकरस है । जैसे शिवजी तीसरे नेत्र से... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८०, जून २०१२)**

सच्चा अधिकारी कौन ?

गुरुदेव ने उन चबूतरों का निरीक्षण किया और कहा : ''इनमें से एक भी अच्छा नहीं है, इन्हें तोड़ो और दूसरा बनाओ ।'' शिष्यों ने उन चबूतरों को तोड़ा और फिर से बनाना शुरू किया किंतु इस बार भी गुरु साहब को उनमें से एक भी पसंद नहीं आया और उन्होंने फिर से बनाने को कहा । ऐसा कई बार हुआ । शिष्य चबूतरे बनाते और गुरु साहब उन्हें तोड़ने को कहते ।

आखिर शिष्य निराश हो गये और... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८०, जून २०१२)**

गुरुहृदय की ज्ञानधारा का 'खोजी'

चतुरदास ने शुद्धि की सेवा पूर्ण कर अत्यंत नम्रता और कौतूहल से पूछा : ''गुरुदेव ! आप गये तो थे लघुशंका जैसी सामान्य क्रिया करने परंतु आये ऐसी आनंदित मुद्रा में हँसते-हँसते ! नाथ ! कृपा करके आप इस रहस्य का उद्घाटन कर मेरी जिज्ञासा शांत कीजिये।''

गुरुजी ने कहा : ''लघुशंका की धारा में एक वृक्ष का बीज बह चला। उस बीज को धारा में बहते देख... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८०, जून २०१२)**

किशमिश एवं मुनक्का

किशमिश भी सूखे हुए अंगूर का दूसरा रूप है। इसमें भी अंगूर के सारे गुण विद्यमान होते हैं। दूध के लगभग सभी तत्त्व किशमिश में पाये जाते हैं। दूध के अभाव में इसका उपयोग किया जा सकता है। किशमिश दूध की अपेक्षा शीघ्र पचती है। मुनक्के के नित्य सेवन से थोड़े ही दिनों में रस, रक्त, शुक्र आदि धातुओं तथा ओज की वृद्धि होती है। वृद्धावस्था में किशमिश या मुनक्के का प्रयोग न केवल स्वास्थ्य की रक्षा करता है बल्कि आयु को बढ़ाने में भी सहायक होता है। किशमिश और मुनक्के की शर्करा शरीर में अतिशीघ्र पचकर आत्मसात् हो जाती है, जिससे शीघ्र ही शक्ति व स्फूर्ति प्राप्त होती है। दौर्बल्यता, रक्ताल्पता, अम्लपित्त, कब्ज, शराब के नशे से छुटकारा पाने के अनुभूत प्रयोगों की जानकारी के लिए पढ़ें... **(लोक कल्याण सेतु, अंक : १८०, जून २०१२)**

देश भर में फैल रही है संस्कारों की सुवास

आरमोरी, जि. गडचिरोली (महा.)

रायपुर (छ.ग.)

फरीदाबाद (हरि.)

हरदा (म.प्र.)

वातावरण को संकीर्तन से मधुमय बनाते बापूजी के साधक

हिसार (हरि.)

रायपुर (छ.ग.)

नसीराबाद, जि. अजमेर (राज.)

अकबरपुर, जि.अम्बेडकर नगर (उ.प्र.)

आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाकार्य

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2012)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.

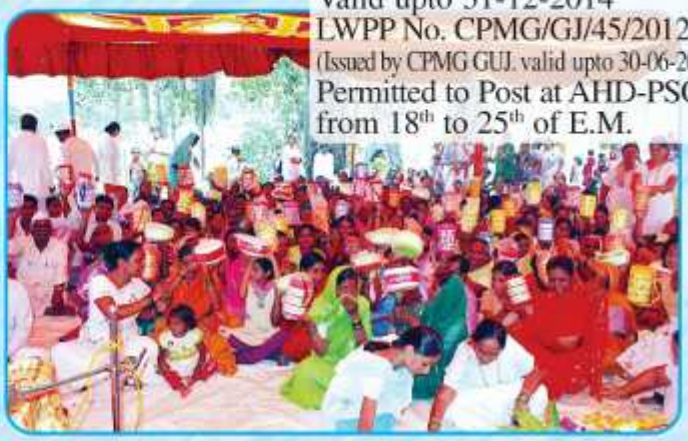

हिम्मतनगर (गुज.) तथा कराड (महा.) के गरीबों में गर्म भोजन के डिब्बों, प्रसाद आदि का वितरण।

ग्वालियर (म.प्र) में भोजन-प्रसाद, वस्त्र आदि तथा कंधकेलगाँव (ओड़िशा) में शरबत का वितरण।

अनगुल (ओड़िशा) में छाछ-वितरण तथा हमीरपुर (उ.प्र.) के विद्यार्थियों में नोटबुक व तुलसी टॉफियों का वितरण।

ॐ आनंद... ॐ आनंद... शुभ समाचार...

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र की अब वार्षिक एवं
द्विवार्षिक सदस्यता का शुभारम्भ हो रहा है।

वार्षिक : रु.30 द्विवार्षिक : रु.50 पंचवार्षिक : रु.110 आजीवन : रु.300

संपर्क : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद-5
फोन : (079) 39877739, 27505010-11